This question paper contains 4 printed pages. *Your Roll No. .....*

Sl. No. of Ques. Paper : **5583** **E**

Unique Paper Code : **213457**

Name of Paper : **Paper-4 : Sanskrit and Culture**

Name of Course : **B.A. (Prog.) Sanskrit Language**

Semester : **IV**

Duration : 3 hours *Maximum Marks* : 75

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

NOTE:— *Unless otherwise required in a question, answer should be written in Sanskrit or Hindi or in English; but the same medium should be used throughout the paper.*

टिप्पणी:— *अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए; लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।*

Answer all questions.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 5
Explain the following :

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।

अथवा (Or)

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजनाना उपासते।।

2. शान्तिपाठ का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। 5
Give an account of शान्तिपाठ in your own words.

3. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 5
Explain the following :
यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्च न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

अथवा (Or)

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

4. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए: 5
Explain the following :

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

अथवा (Or)

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

5. ईशावास्योपनिषद् के दर्शन पर एक लघु निबन्ध लिखिए। 5
Write a short essay on the philosophy of ईशावास्योपनिषद्

अथवा (Or)

ईशावास्योपनिषद् के अनुसार 'ईश्वर' की संकल्पना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
Elaborate the concept of ईश्वर according to the ईशावास्योपनिषद्.

6. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए: 5
Explain the following :

वेदमनूच्याचार्योन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्।

अथवा (Or)

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकँ सुचरितानि। तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि।
ये के चास्मच्छ्रेयाँसो ब्राह्मणाः। तेषां त्वयाऽऽसनेन प्रश्वसितव्यम्।

7. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए: 6
Explain the following :
पादबद्धोऽक्षरसमस्तन्त्रीलयसमन्वितः।
शोकार्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा।।

अथवा (Or)

आजगाम ततो ब्रह्मा लोककर्ता स्वयं प्रभुः।
चतुर्मुखो महातेजा द्रष्टुं तं मुनिपुङ्गवम्।।

8. वाल्मीकि ने अनुष्टुप् छन्द की रचना कैसे की ? 5
How did वाल्मीकि create अनुष्टुप् meter ?

9. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिएः 6
Explain the following :

पितुरन्तः पुरं दद्यान्मातुर्दद्यान्महानसम्।
गोषु चात्मसमं दद्यात्स्वयमेव कृषिं व्रजेत्।।

अथवा (Or)

करिष्यन्न प्रभाषेत कृतान्येव तु दर्शयेत्।
धर्मकामार्थकार्याणि तथा मन्त्रो न भिद्यते।।

10. अतिथि–सत्कार के विषय के विदुर की क्या विचार है? 5
What is the ideas of Vidura about serving a guest.

अथवा (Or)

विदुरनीति के 38वें अध्याय का सार अपने शब्दों में लिखिए।
Write the summary of 38th Chapter of विदुरनीति in your own words.

11. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिएः 6
Explain the following :

चत्वारि भारते वर्षे युगान्यत्र महामुने।
कृतं त्रेता द्वापरञ्च कलिश्चान्यत्र न क्वचित्।।

अथवा (Or)

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या मध्ये शूद्राश्च भागशः।
इज्यायुधवाणिज्याद्यैर्वर्तयन्तो व्यवस्थिताः।।

12. विष्णुपुराण के अनुसार भारतभूमि में उत्पन्न लोग देवताओं से किस प्रकार श्रेष्ठ हैं? 5
How are the people of भारतभूमि better than देवता in accordance with Vishnupurana ?

अथवा (Or)

विष्णुपुराण में वर्णित भारतवर्ष का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
Describe भारतवर्ष in your own words as depicted in विष्णुपुराण.

13. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए: 6
Explain the following :

दक्षिणां दिशमुत्पन्नाः समीपे कण्टकद्रुमाः।
उद्यानं गृहवासे स्यात्तिलान्वाऽप्यथ पुष्पितान्।।

अथवा (Or)

सम्पूज्य वरुणं विष्णुं पर्जन्य तत्समाचरेत्।
अरिष्टाशोकपुंनागशिरीषाः सप्रियंगवः।।

14. अग्निपुराण के अनुसार जलाशय निर्माण किस प्रकार किया जाना उपयुक्त है ? 6
How preparation of pond be constructed according to अग्निपुराण ?